शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

# दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधो कायक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन

– डॉ० रश्मि गौतम*

***महिला सम्बन्धी कार्यक्रमों के प्रसारण में दूरदर्शन की एक सराहनीय भूमिका रही हे। इनके माध्यम से दूरदर्शन ने महिला सशक्तिकरण का एक सार्थक प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध लेख मं शोधार्थी ने दूरदर्शन के इस प्रयास का समीक्षात्मक अध्ययन किया है।***

***विषय संकेतः***– *दूरदर्शन, महिला कार्यक्रम, सशक्तिकरण*

जो सक्षम है उसी को जीने का हक है-(Survival Of The Fittest)-डार्विन इस विकासवादी सिद्धान्त पर समग्र विकास की कहानी आसानी से समझी जा सकती है चाहे मानव का विकास हो या दूरदर्शन का विकास। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में मनोरंजन भी शामिल है। मनोरंजन के बिना किसी भी व्यक्ति का जीवन नीरस-सा बना रहता है। हंसना-सोना दोनों ही जीवन के कटु सत्य है। साथ ही यह भी सत्य है कि मनोरंजन के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा सा है। मनोरंजन की दुनिया के जादू का असर जनमानस पर इस तरह पड़ रहा है कि परम्परागत माध्यमों का लोप होता जा रहा है और अत्याधुनिक संचार-माध्यमों की बाढ़-सी आती जा रही है।

दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पहलुओं को प्रस्तुत किया जाता है। संचार माध्यमों के द्वारा किसी भी संदेश को सहजता से प्रसारित किया जा सकता है क्योंकि ''संचार सहानुभूति का विनिमय है''। यही कारण है कि अधिकांश कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी नितान्त आवश्यक होती जा रही है। अगर यह कहा जाये कि महिलाओं के बिना किसी कार्यक्रम का प्रसारण बिना अस्त्र-शस्त्र के युद्ध के लिए प्रस्थान करने के बराबर है। अर्थात् उन कार्यक्रमों को सफल होने से पहले ही असफलता की ओर अग्रसर करना है। 'बच्चा' माँ के सानिध्य में रहकर ही पारिवारिक परिवेश से रूबरू होता है उसके बाद समाज के सम्पर्क में आता है। कहा जाता है कि महिलाओं में अभिव्यक्ति की जितनी शक्ति होती है उतनी पुरुषों में नहीं। यही कारण है कि वर्तमान में संचार के माध्यमों में महिलाओं की भागीदारी से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि महिलाएँ समाज का अहम् हिस्सा है। आज हमारे समाज में संचार माध्यमों के कारण ही अनेक परम्पराओं एवं कुरीतियों का अन्त हो सका और समाज की संरचना निरन्तर परिवर्तित होती जा रही है। जैसे-दहेज-प्रथा, कन्या-भ्रूण जाति प्रथा, हत्या, बहु-विवाह, बाल-विवाह, तलाक, घरेलू हिंसा, ऊँच-नीच आदि कुप्रथाओं में निरन्तर परिवर्तन संचार माध्यमों की देन है। सामाजिक संरचना में परिवर्तन ही दूरदर्शन की अहम् भूमिका है।

दूरदर्शन को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसके माध्यम से कार्यक्रमों के प्रसारण का समाज पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। दूरदर्शन द्वारा विगत वर्षो में जीवन के विविध पक्षों से सम्बधित जो कार्यक्रम निर्मित और प्रसारित किये जाते है वे निश्चित रूप से अमूल्य धरोहर है। किसी चैनल की पहचान उस पर प्रसारित कार्यक्रमों के आधार पर स्पष्ट होती है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं विषयवस्तु में दर्शकों की अभिरूचियों के अनुरूप और अन्य चैनलों के बदलते परिवेश के अनुकूल परिवर्तन लाने संबंध में सच ही कहा गया है कि 'इस बदलते माहौल में और दर्शकों की बदलती रुचि को देखते हुए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या दूरदर्शन को अपने कार्यक्रमों के कलेवर में भी परिवर्तन लाना होगा।'[1] जब महिला दर्शकों के संदर्भ में दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों का जिक्र किया जाये तो इनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

शत-प्रतिशत प्रभाव पड़ता है क्योंकि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षाकृत अधिक जज्बाती होती हैं। अधिकांश महिलाएँ इन कार्यक्रमों में स्वयं को खोजने लगती हैं। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की विषयवस्तु समाज पर गहरी छाप छोड़ जाती है। अगर किसी कार्यक्रम की विषयवस्तु जितनी ही मसालेदार होगी, उस कार्यकम की टीआरपी उतनी ही उँची होगी। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की विषयवस्त् दर्शकों के अनुरूप होने से उनका प्रभाव और अधिक पड़ता है। यही कारण है कि विषयवस्तु के आधार पर दूरदर्शन के कार्यक्रम का विभाजन लाज़िमी है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम को कई भागों में वर्गीकृत किया गया है जिनका उल्लेख इस प्रकार है।

**सूचनात्मक कार्यक्रमों की समीक्षा**

सूचना के बिना किसी भी समाज के बहुआयामी विकास के बारे में सोचना व्यर्थ ही होगा। सूचनात्मक कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रमुख रूप से समाचार, क्विज़ प्रतियोगिता, समसामयिक कार्यक्रम, खेल संबंधी, प्रश्नोत्तरी, विज्ञापन, गेम शो और वृत्तचित्र आदि कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त संसदीय कार्यवाही का सीधा प्रसारण, राज्य विधान सभाओं की गतिविधियों का प्रसारण, राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं का सीधा प्रसारण, समाचार पत्रिका, सूचनात्मक वृत्तचित्र, फीचर, व्यक्तिगतपरक कार्यक्रम आदि कुछ ऐसे कार्यक्रम हैं जो सभी दर्शक देखना पसन्द करते हैं। मानवाधिकार, ग्राहक अधिकार, उपभोक्ता अधिकार फोरम, कानूनी सलाह, पर्यटन, व्यावसायिक मुद्दे, विज्ञान और तकनीकी विषयक कार्यक्रमों को दूरदर्शन पर प्रमुखता से प्रसारित किया जाता है।

दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित समाचार प्रत्येक दिन निर्धारित समय पर प्रात:कालीन समाचार, अपराह्न समाचार और रात्रि कालीन समाचारों का प्रसारण किया जाता है। दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों की विषयवस्तु के अन्तर्गत-अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय समाचारों का प्रसारण किया जाता है। इन समाचारों के अन्तर्गत समसामयिक मुद्दों, खेलकूद संबंधी, आर्थिक, व्यापार जगत् संबंधी, सौन्दर्य संबंधी, फैशन वीक, मौसम संबंधी, देश-विदेश संबंधी चर्चाएं और देश-विदेश यात्राएं आदि विषयवस्तु पर आधारित होते है।

दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों की समीक्षा में समाचार, क्विज शो, चर्चा, परिचर्चा, साक्षात्कार, इवनिंग शो, कल्याणी-2, ब्रेक फास्ट न्यूज़, राज्यों से समाचार, आंखो देखी और हेल्थ शो आदि को प्रमुखता से सम्मिलित किया है। दूरदर्शन के न्यूज चैनल पर प्रसारित समाचार प्रत्येक दिन प्रात: 8.00-9.00 बजे समय पर प्रात:कालोन समाचारों का प्रसारण किया जाता है। दूरदर्शन के न्यूज चैनल पर प्रसारित समाचारों की विषयवस्तु के अन्तर्गत-अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय समाचारों का प्रसारण किया जाता है जिसके अन्तर्गत समसामयिकी मुद्दों, खेलकूद संबंधी, आर्थिक, व्यापार जगत संबंधी, सौन्दर्य संबंधी, फैशन वीक, मौसम संबंधी, देश-विदेश संबंधी चर्चाएं और देश-विदेश यात्राएं आदि विषयवस्तु पर आधारित होते है।

दूरदर्शन के न्यूज चैनल पर प्रसारित समाचार प्रत्येक दिन निर्धारित समय पर प्रात:कालीन समाचार, अपरान्ह समाचार और रात्रि कालीन समाचारों का प्रसारण किया जाता है। दूरदर्शन चैनल के न्यूज चैनल (डीडी-न्यूज) पर 'चर्चा में (न्यूज-व्यूज़)' फोन-इन-कार्यक्रम के तहत महिलाओं के अधिकारों पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। यह कार्यक्रम प्रत्येक रविवार रात्रि 11.00-12.00 बजे न्यूज चैनल (डीडो-न्यूज) पर प्रसारित किया गया है। इस कार्यक्रम का संचालन नीलम शर्मा के द्वारा किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलाओं से संबंधित समस्याओं के समाधानों पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिन ज्वलंत मुद्दों पर आधारित महिलाआं कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है उनमें मुख्य रूप से महिला अधिकार, बलात्कार, हत्या, दहेज हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, लिंग असमानता, महिला शिक्षा एवं नारी शक्ति आदि संवेदनशील मुद्दों को इस कार्यक्रम में शामिल किये जाते हैं।

दूरदर्शन के न्यूज़ चैनल पर प्रश्न श्रृंखलाओं पर आधारित कार्यक्रम फोन-इन-कार्यक्रम को प्रसारित किया गया है। यह सूचनापरक, विकासपरक, ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणात्मक कार्यक्रम है। महिलाओं की आधी-आबादी होने के बावजूद भी उन पर अत्याचार हो रहे है। कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित विशेष कार्यक्रम मुझे जीने दो डीडी-न्यूज चैनल पर प्रसारित किया गया है। अपर्णा सेन द्वारा निर्देशित कार्यक्रम का संचालन अशोक श्रीवास्तव के द्वारा किया गया है। गर्भवती महिलाओं के गर्भस्थ शिशु के संरक्षण हेतु कानून और कन्या

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

भ्रूण हत्या पर विशेष चर्चा की गयी है। हरियाणा राज्य में डॉ0 वी एस0 दहिया (स्वास्थ्य अधिकारी) ने एक व्यक्ति को सजा दिलाई थी। इन्दिरा जय सिंह का कहना है कि 'जनसंख्या नियंत्रण संबंधी साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए न कि कन्या भ्रूण हत्या।' अगर दो ही बच्चों को जन्म दिया जाये तो भ्रूण हत्या जैसी समस्याएं ही न हो।

| कन्या भ्रूण हत्या संबंधी प्रश्न | दर्शकों की प्रतिक्रिया (% में) | |
|---|---|---|
| | हाँ | नहीं |
| क्या स्टिंग आपरेशन के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या करने | 91 | 9 |
| कन्या भ्रूण हत्या करने वालों को सजा मिलनी चाहिए | 92 | 8 |

शहरी और सम्पन्न लोगों में यह समस्या अधिक भयानक रूप में व्याप्त है। इस देश में पांच लाख लड़कियां हर साल गर्भ में ही मारी जाती है। आन्ध्र प्रदेश में लड़कियों को बचाने के लिये सानिया मिर्जा को ब्रांड एम्बेस्डर बनाया गया है। पंजाब हेल्थ एसोसिएशन के सचिव मनमोहन सिंह के शब्दों में 'पंजाब में सबसे ज्यादा कन्या भ्रूण हत्या की जाती है।' ये ग्लोबल विद्रोह ही तो है जो मानवीय संवेदनाओं को पूरे विश्व में घट रही घटनाओं के साथ आपके घर-परिवार, समाज, देश के पूरे परिवेश को ही एकदम बदल देता है।[2] महिलाओं को सूचनाओं से वंचित रहने का तात्पर्य समाज के विकास में बाधा। इस कार्यक्रम के समापन में संचालक अशोक श्रीवास्तव ने कन्या भ्रूण हत्या के संबंध में कहा है कि-'मत मारो मां मुझे गर्भ में, मां मैं तुम्हारा अंश हूँ, जीवन के हर मोड़ पर, तुम्हारा सहारा बनूंगी, तुम्हारे दूध का कर्ज चुकाऊंगी।' समाज में आधी-आबाधी का परचम लहराने वाली महिलाएँ ही सूचना तंत्र से वंचित रहेंगी तो समाज के सम्पूर्ण विकास की कल्पना करना व्यर्थ है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में विशेष तौर पर सूचना के प्राण कहे जाने समाचारों की प्रस्तुति में अधिकांशतः महिलाओं की भागेदारी रहती है। यही नहीं, केबल चैनलों में भी महिलाओं को वरीयता दी जाती है जिसका मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि महिलाओं की भाषा, समाज सृष्टि काल से ही समझता आया है।

**शिक्षा संबंधी कार्यक्रम**

स्त्री शिक्षा के महत्व के संदर्भ में सच ही कहा है कि एक पुरुष को शिक्षित करने से अच्छा एक स्त्री को शिक्षित करना है क्योंकि एक स्त्री के शिक्षित होने पर पूरा परिवार शिक्षित होता है ताकि पूरे समाज का समग्र विकास हो सके।' गार्गी, अपाला एवं घोषा जैसी विदुषी महिलाओं ने शिक्षा पर अपना एकाधिकार कायम किया था। शैक्षिक कार्यक्रमों के संबंध में प्रभु झिंगरन ने कहा है कि दूरदर्शन का चेहरा व्यापारिक हो गया है, किन्तु अल्पांश समय में आने वाले प्रौढ़ शिक्षा, टीकाकरण, स्त्री स्वास्थ्य, बाल कल्याण एवं परिवार नियोजन के कार्यक्रमों ने दूर-दराज के गांवों तक सूचना पहुंचाकर सजगता फैलायी है।[3]

ज्ञान के प्रसार द्वारा लोगों, खासकर उपेक्षित वर्गों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिये दूरदर्शन ने हमेशा शैक्षिक कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी है। दिल्ली से स्कूली प्रसारण 1961 में ही शुरू हो गयी थी। राज्य शिक्षा संस्थाओं द्वारा निर्मित कार्यक्रम हिन्दी, मराठी, गुजराती, उड़िया और तेलगू में संबद्ध क्षेत्रीय भाषा के ट्रांसमीटरों द्वारा प्रसारित किये जाते है, राष्ट्रीय नेटवर्क डीडी-1 से उच्च शिक्षा और माध्यमिक स्कूल कार्यक्रम विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिये आवंटित समय में दिखाये जाते है। ज्ञान दर्शन दूरदर्शन का एक विशिष्ट चैनल है, जो फिलहाल लगातार 24 घंटे कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। यह चैनल 26 जनवरी 2000 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के सहयोग से शुरू किया गया था। इसके कार्यक्रम का दायरा व्यापक है, जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा (विश्वविद्यालय) के स्तरों, तकनीकी और व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला, पर्यटन आदि विषयों से संबंधित कार्यक्रम है।

दूरदर्शन के न्यूज चैनल पर प्रसारित महिलाओं के अधिकारों एवं नारी शक्ति पर आधारित कार्यक्रम आधी आबादी (बात नारी की) के निर्माता-दिनेश कुमार सिंह और निर्देशक-मयंक प्रताप सिंह एवं प्रीती सिंह

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

है। इस कार्यक्रम का संचालक-सुधा पाण्डेय, कैमरा एवं वीडियो संपादन-धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय, विशिष्ट संवाददाता रश्मि मिश्रा, आर0 एस0 उपाध्याय, मनीषा खण्डेलवाल एवं दीपक सिंह धामी है।

दूरदर्शन के न्यूज चैनल पर प्रसारित आधी आधो आबादी (बात नारी की) एवं प्रगति (बात नारी की) कार्यक्रम के तहत महिलाओं के अधिकारों की बात, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, बाल विवाह एवं नारी शिक्षण-प्रशिक्षण (कम्प्यूटर प्रशिक्षण, प्रोएड ट्रेनिंग, खेल संबंधी प्रशिक्षण) आदि महिलाओं से संबंधित संवेदनशील समसामयिक मुद्दों पर चर्चा-परिचर्चा, साक्षात्कार, सेमिनार, कार्यशाला एवं प्रशिक्षण शिविर आदि के माध्यम से बात नारी की जाती है। यह सूचनात्मक, विकासात्मक, ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणात्मक कार्यक्रम है। कठपुतली खेल, चित्रकला, हस्त शिल्प, नृत्य और नाट्य का अदुभुत मिश्रण है। गति, लचीलापन और कम लागत जैसी विशेषताओं से कठपुतली खेल प्रभावशाली और उपयोगी है। कठपुतलियों का अजीबोगरीब स्वरूप इनकी संचार शक्ति बढ़ाता है और इनके क्रिया-कलाप दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करते है।[4]

**प्रौढ़ शिक्षा आधारित टेलीफिल्म : बेटियाँ**

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की प्रस्तुति बेटियां नामक टेलीफिल्म का प्रसारण दूरदर्शन के नेशनल नेटवर्क पर 7-4-2009 को प्रसारित किया गया था। इस कार्यक्रम की प्रस्तुति का प्रमुख कारण यह है कि महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना है। 'शिक्षा के बिना मानव पशु समान होता है।' इस बात की पुष्टि इस कार्यकम के माध्यम से होती है। इस कार्यक्रम में अशिक्षित महिला की स्थिति को बखूबी दिखाया गया है। इसके अन्तर्गत बाल-विवाह के दुष्परिणामों को भी दृश्यों के साथ जिक्र किया है।

सुशीला का पति उसका तिरस्कार करते हुए कहता है 'मुझे बीबी चाहिए नौकरानी नहीं, न अखबार पढ़ना आता न किताब। लोगों से मिलवाते हुए शर्म आती है मुझे।' रामलाल की पुत्री दुलारी पति के द्वारा अशिक्षा के कारण प्रताड़ित किये जाने के पश्चात् अपने बापू द्वारा कह गये शब्दों को दोहराती है' क्या करना है इन्हें पढ़ा-लिखा कर, जल्दी से हाथ पीले कर डालो इन मुसीबतों को।' दुलारी दृढ़ संकल्प लेते हुए कहती है 'माँ मैं पढ़ूँगी ताकि सम्मान के साथ लौट सकूं अपने पति के पास।' दुलारी अपने पिता से कहती है 'बापू अब हमारी किसी भी बहन का गौना कच्ची उम्र में मत करना, पहले उन्हें पढ़ने देना जब वो अपने पैरों पर खड़ी होने लायक हो जाये तब उनके गौने की बात सोचना।' राम लाल को अपनी बहन की बात याद आती है 'अरे राम लाल! जमाना बदल गया है तू भी बदल जा, ये बेटे-बेटे की रट छोड़ और अपनी बेटियों को अच्छे से पढ़ा-लिढ़ा जैसे मैं पढ़ा-लिखा रही हूँ।' राम लाल अपनी बेटी दुलारी से कहता है 'तुम्हारा ये दोषी बाप तुम लोगों को वचन देता है कि मैं अपनी बेटियों का इतना पढ़ाऊगा-इतना पढ़ाऊगा कि कोई मर्द का बच्चा ये न कहे कि मेरी बेटियां अनपढ़ गवार हैं।' दुलारी अपने पति के आग्रह पर पति से कहती है 'हम अपने घर जरूर आयेंगे पर पूरी तरह पढ़-लिख कर ताकि आप हम पर षर्म नहीं गर्व महसूस कर सकें।'

दूरदर्शन पर प्रसारित इस टेलीफिल्म में अशिक्षा एक अभिशाप के रूप में दिखायी जाती है, जिससे दर्शक महिला शिक्षा के प्रति जागरूक हो जाये। बाल विवाह, घरेलू हिंसा और पारिवारिक उत्पीड़न को रोका जा सके। दूरदर्शन के शैक्षिक चैनल जैसे-राज्य शैक्षिक टीवी एवं ज्ञान दर्शन के माध्यम के द्वारा प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा एवं कन्ट्रीवाइड क्लास रूम, व्यवसायिक शिक्षा और विज्ञापन फिल्मों के माध्यम से शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। महिला शिक्षा के संदर्भ में यह कटु सत्य है कि 'एक महिला को शिक्षित करने से एक परिवार को शिक्षित करना और परिवार से पूरा समाज शिक्षित होता है।' दीक्षा, कम्प्यूटर की दुनिया, रोजगार के अवसर, हिन्दी क्विज, विज्ञान नगर, ग्रामोदय, यूथ क्विज, मेरी बात कार्यक्रम आदि दूरदर्शन पर प्रसारित किये जाते है।

**स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम**

किसी भी समाज के लिये सूचना और मनोरंजन के साथ ही साथ स्वास्थ्य का बहुत महत्व होता है। जब महिलाओं के स्वास्थ्य के संबंध में सोचा जाये तो दूरदर्शन महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह सजग और सफल है। संचार का प्रयोग एक तरफ किसानों में नई-नई तकनीकों और प्राकृतिक सम्पदाओं के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए किया जा सकता है तो दूसरी ओर संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग गरीबी का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

उन्मूलन, परिवार कल्याण को बढ़ावा देना और लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की दिशा में किया जा सकता है। महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन पर किया जा रहा है। जैसे-हैलो जिन्दगी, कल्याणी-1, कल्याणी-2, हैलो सेहत, हैलो डी.डी. सुबह सबेरे और योग विज्ञान आदि विशेष तौर पर महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम हैं जिनका दूरदर्शन पर प्रसारण किया जा रहा है। 'जाग सखी एवं कल्याणी कार्यक्रम-साक्षरता, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा एवं अन्य सामाजिक कार्यों में बराबरी की भूमिका निभाते हैं। अभी तक के महिला सम्बन्धी कार्यक्रमों में यह लोकप्रिय सूचनात्मक कार्यक्रम था।' कल्याणी कार्यक्रम का उद्देश्य स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति जनमानस में कुछ प्रमुख बीमारियों जैसे-मलेरिया, एच0आई0वी0/एड्स (ज्ञान बचाये जान), आयोडीन, तम्बाकू सेवन, जल जनित रोग आदि के प्रति जागरूकता पैदा करना है। According to Indira Gandhi, 'Family planning is the key of happiness of every person and family.' अर्थात 'परिवार नियोजन प्रत्येक व्यक्ति और परिवार की खुशहाली की कुंजी है।'[6]

दूरदर्शन पर स्वास्थ्य संबंधी अनेक कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं जिनमें से कुछ कार्यक्रम महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंध रखते है जैसे-दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित कल्याणी-1, जासूस विजय और योग विज्ञान और डीडी न्यूज चैनल पर टोटल हेल्थ, हैलो डीडी, हैलो सेहत, कल्याणी-2 और सुबह सबेरे आदि कार्यक्रमों के माध्यम स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की जाती है। महिलाओं के स्वास्थ्य की महत्ता के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि-'तुम मुझे सौ अच्छी मातायें दो, मैं देश का नक्शा बदल कर रख दूंगा।'[7] स्वास्थ्य संबंधी विशेष अभियानों के अन्तर्गत कुछ कुष्ठ रोग निवारण अभियान, शिशु की देखभाल, एक जागरूकता अभियानों, पोलियो निषेध अभियान, मातृत्व रक्षा कार्यक्रम इत्यादि राज्य एवं केन्द्र सरकारों के जन जागरण अभियानों में हमारे केन्द्र में प्रतिभागिता की। परिचर्चाओं का आयोजन करके तथा विशेष रिपोर्ट तैयार करके इन अभियानों की विशिष्टताओं को उजागर किया गया है।[8] 'एड्स को जड़ से मिटाने क लिए, आओ हाथ से हाथ मिलाएं। कंडोम का इस्तेमाल कर, जन-जीवन को स्वस्थ बनाएं।।'[9]
रूढ़िवादियों एवं कुरीतियों के खिलाफ, नारी-समानता, नारी-शक्ति, कन्या भ्रूण हत्या, लिंग परीक्षण और जन्मोपरान्त कन्या हत्या आदि सामाजिक बुराईयों के समापन हेतु अभियान स्वरूप यह लघु विज्ञापन फिल्म का प्रसारित किया जा रहा है। इसमें फिल्माये गये दृश्यों के माध्यमों बेटी-बेटा में फर्क बाखूबी दर्शाया गया है। लघु फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम के अन्तर्गत महिला एवं बाल विकास कल्याण की तरफ से कन्या जन्म को प्रोत्साहन हेतु एक लघु विज्ञापन फिल्म का भी प्रदर्शन किया जाता है जिसको वहीदा रहमान और दिया मिर्जा पर फिल्माया गया है। इस विज्ञापन फिल्म के प्रसारण का मुख्य उद्देश्य है बेटा-बेटी को समानता का अधिकार दिये जाने इसका नारा है। 'बेटी के जन्म पर उत्सव मनाओ, पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाओ।'

दूरदशन पर प्रसारित कार्यक्रमों में समाचार, मनोरंजन और तीसरा स्थान स्वास्थ्य कार्यक्रमों का है। यही कारण है कि आज इस बात से कोई भी दर्शक इन्कार नहीं कर सकता कि दूरदर्शन के सार्थक सहयोग से परिवार नियोजन, जनकल्याण की योजना, टीकाकरण, एचआईवी एड्स के प्रति जागरूकता, टीबी, कैंसर जैसे अनेक लाइलाज बीमारियों की जानकारी, महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु समय-समय पर कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार में दूरदर्शन अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

**मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम**

मनोरंजन के बिना अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती हैं क्योंकि मनोरंजन मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। रोटी, कपड़ा और मकान तीनों प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है। मनोरंजन भी व्यक्ति के जीवन का एक हिस्सा बन गया है। मनोरंजन की जादुई दुनिया का असर आमजनों पर इस तरह पड़ रहा है कि परम्परागत माध्यमों का लोप होता जा रहा है और अत्याधुनिक संचार-माध्यमों की बाढ़-सी आती जा रही है। नाटक, टेलीफिल्म, धारावाहिक और हास्य नाटिकाएं उसी तरह फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम दूरदर्शन के सबसे कार्यक्रम प्रमुख है। जिनमें लोकप्रिय कार्यक्रम इस प्रकार है-फीचर फिल्म, चित्रहार, चित्रमाला, टॉपटेन,

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

गानों और दृश्यों पर आधारित धारावाहिक और फिल्मी-पत्रिकाएँ' आदि शामिल है। इसी के साथ संगीत पर आधारित कार्यक्रम जैसे-गजल, गीत-संगीत, लोकगीत, लोकप्रिय संगीत, भजन आदि भी काफी लोकप्रिय है। इसी कार्यक्रम में टॉक-शो और क्विज के कार्यक्रम भी आते है। वास्तव में दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से सभी दर्शकों को सन्तुष्ट करना पाना मुश्किल काम है परन्तु सरकारी चैनल होने के कारण दूरदर्शन की अपनी कुछ प्राथमिकताएँ भी है जैसे-देश की रक्षा, मित्र देशों की रक्षा करना, महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं विकास पर बल देना एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना आदि। दूरदर्शन पर प्रसारित मनोरंजक कार्यक्रमों के प्रसारण का प्रमुख उद्देश्य दर्शकों को मनोरंजन प्रदान करना। इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत-नाटक, टेलीफिल्म, धारावाहिक और हास्य नाटिकाएं आदि आते हैं। फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम दूरदर्शन के सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम है जैसे-फीचर फिल्म, चित्रहार, चित्रमाला, टॉपटेन, गानों और दृश्यों पर आधारित धारावाहिक एवं फिल्म पत्रिकाएँ आदि शामिल हैं। 'मनोरंजन का कोई भी माध्यम शुद्ध, कपोल-कल्पना पर आधारित नहीं होता है। किसी न किसी रूप में वह हमारे यथार्थ से अवश्य प्रेरित और प्रभावित होता है।'[10]

सीरियल दर्शक के भाव-लोक को सीधे और बिना किसी आडंबर के अपील करने वाली विधा है। दूरदर्शन पर प्रसारित दो प्रकार के सीरियल आये है। पहले वे है-जो सीरियल के लिए जरूरी तमाम फार्मूलों, लटकों को पूरा ध्यान में रखकर बनाये जाते है। जैसे-हम लोग और बुनियाद। दूसरे सीरियल वे है-जो प्रचलित फार्मूलों को छोड़कर बनाये गये ह जिसमें मूलत: नुक्कड़ प्रमुख रहा है।

बुनियाद, श्रीमान् श्रीमती, ये जो है जिन्दगी और है यही जिन्दगी आदि मूलत: हास्य धारावाहिक हैं जो व्यस्त जिन्दगी को खुशहाल एवं चुस्त दुरस्त बनाये रखने में सहायक है। दर्शक इन कार्यक्रमों के माध्यम से मनोरंजन कर लेते हैं।

**परिवारिक कथा पर आधारित कार्यक्रम**

हमलोग, खानदान, बुनियाद, पूर्णिमा, जिन्दगी, जुनून, हमराही आदि। 'हम लोग' और 'बुनियाद' मूलत: सोप ओपेरा के परम्परा के नमूने है जहां कोई एक केन्द्रीय भाव या विचार, सुविचार घटनाक्रम, चरित्र और नाटकीयता के साथ प्रस्तुत किया गया तो दूसरी और 'नुक्कड़' जैसे सीरियल में किसी केन्द्रीय विचार के होते हुए भी किसी एक नाटकीय स्थिति की व्याख्या की गयी है।

पिया का आंगन नामक पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता जगमोहन भंवर एवं निर्देशक मनोज नौटियाल हैं। लेखक-बॉबी खान, आकारादित्य, गोतकार-शकील आजमी, संगीत-विजय वर्मा, छायांकन-अजय झा, संकलन-अजीत पाण्डेय, कड़ी निर्देशक-राजेश, रामनाथ दुबे, पंकज झा ने किया है। मुख्य कलाकार-राजीव वर्मा, अमिता नांगिया, विनीता मलिक, हिमांगी कवि, रौनक अहुजा, अक्षत गुप्ता, अंकिता श्रीवास्तव, तनिमा भट्टाचार्य और यसूफ हुसैन आदि हैं। 'शादी से पहले, शादी से पहले, सोचा था, इधर-उधर दिल होता तो था, फिर छिन जाये न आजादी, फिर घिरे न सपनों की बांहों, एक रिश्ते में बंधकर, जोड़ लिये मैंने सब बंधन, कभी छूटे ना पिया का आंगन, वक्त चलाकर देख ले पत्थर, तोड़ना पड़ेगा ये दर्पण, कभी छूटे ना पिया का आंगन।' भाव पूर्ण गीत से पिया का आंगन धारावाहिक की कहानी स्वाति और श्लोक दो पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। दोनों ही अपने परिवार की मान मर्यादा को ध्यान में रखकर अपनी इच्छाओं को कुर्बान कर देते है। इस धारावाहिक मुख्य महिला पात्र स्वाति एक आदर्श पत्नी, बहू और भाभी के रूप में पिया के आंगन को अपने सपनों से सजोए रखती है। मर्यादा नामक सामाजिक-पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता भगवान एम0 यादव और लेखक सक्षम है। किरन कुमार, सुरेन्द्र पाल, शशि शर्मा, मोनिका काले, ज्योति, साहेबा, कालिल सोनी, रंजना, विनीता, अश्विलेख, देवेन्द्र चौहान, एस0एस0 जाहिर, नूपूर, साधना गुप्ता, विनीता, वीरेन्द्र बाबर, तेज सप्रु और शशि गरिमा आदि मुख्य कलाकार हैं। 'अटल रहे इरादा, बस याद रहे मर्यादा' नामक भावपूर्वक गीत से इस धारावाहिक की शुरूआत होती है। यह धारावाहिक 'व्यवसाय एवं आदर्शों के बीच, घाटे-मुनाफे के बीच की कहानी' पर आधारित है। इस धारावाहिक की कहानी दो जमींदार परिवारों के मध्य इन्तकाम की आग में मर्यादा और कारोबार के ईर्द-गिर्द घूमती रही है। मान-मर्यादा के आगे रिश्ते-नातों का कोई स्थान नहीं दिया गया है। एक-दूसरे को नीचा दिखाना, बरबादी को निशाना बनाया गया है। समय के साथ बदलाव चाहने वाली उनकी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

संतानों ने मान-मर्यादाओं का ध्यान रखकर प्रेम विवाह को अहमियत दी जो इन दोनों परिवारों की मर्यादा के खिलाफ है।

तुम देना साथ मेरा एक भावनात्मक एवं पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता राहुल भाट एवं सारिका भाट है और निर्देशन राहुल भट्ट के द्वारा किया गया है। संगीत-मदन शंकर और छांयाकन-प्रकाश का है। इस कार्यक्रम के मुख्य कलाकार-राजीव वर्मा, गजेन्द्र चौहान, अमित और पिंकू शर्मा हैं। तुम देना साथ मेरा में शारीरिक चुनौतियों को बखूबी दिखाया गया है। शारीरिक चुनौतियों से जूझ रहे दो युवा प्रेमियों की कहानी पर आधारित है। शारीरिक अक्षमताओं का सामना कर रहे युवाओं की भावनाओं को परिवार और समाज समझ सकें। इस कार्यक्रम की मूल कथा पंजाब में रहने वाले दो परिवारों के ईद-गिर्द घूमती है जो शारीरिक अक्षमताओं वाले युगल प्रेमी की कहानी पर आधारित है। अंधापन, बहरापन और गूंगेपन जैसी शारीरिक अक्षमताओं का सामना करते हुए भी सामान्य लोगों की जीवन-यापन करना, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना और दूसरे की भावनाओं को समझा पाना आदि। पीहर (चूड़ियों से चुनौतियों तक का सफर) एक सामाजिक-पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता रमेश बोकाडे है और निर्देशन हिमांशु कोनसोल ने किया है। इसका संगीत ललित सेन का है। इसके मुख्य कलाकार-टीना पारख, साधना सिंह, दिलीप थाणेश्वर, पृथ्वी जुत्शी, राज वर्मा, अमित बहल, पल्लवी चन्द्रन और हितेष कृपलानी हैं। यह कहानी ऐसी महिला की है जो शादी करके अपने पति के साथ विदेश चली जाती है। वहां वह अपने मातृभूमि की सुगन्ध और जमीनी स्तर की भावनाओं को खोजती रही है। जीवन स्तर, संस्कृति और संस्कारों को पाश्चात्य संस्कृति किसी न किसी रूप प्रभावित करते है अर्थात् पाश्चात्य संस्कृति के ढल पाना आसान नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति में मानवीय संवेदनाओं का गला किस प्रकार से घोटा जा रहा है, यही अवधारणा इस धारावाहिक की मूल कहानी के इर्द-गिर्द घूमती है। एक विदेशी लड़के से साथ विवाह के उपरान्त किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ता है? और किस प्रकार से उनका वैवाहिक जीवन प्रभावित होता है? इन्हीं समस्याओं को इस धारावाहिक के माध्यम से उजागर किया गया है।

सात वचन सात फेरे एक सामाजिक पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता-निर्देशक मित्तर सिंह है। संगीत कोइली और आकृति आर0 प्रसाद का है। छायांकन एस0 कुमार और तिमाला हेडे ने किया हैं। मुख्य कलाकार गुफी पेंटल, अवतार गिल, वैष्वणी, कुलदीप दुबे, अमित भेल, अमित पचौरी, काजल, राजेश दुब, राधा कृष्ण दत्त, निशिकान्त दीक्षित, निशा सिंह, जीत कौर, राकेश विध्व, सौन्द्रा गर्ग, सान्या गिल, कंबल जगदीश, राजेश सब्रवाल, पूजा सेट्टी और ब्राउनी पराशै हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार सात वचन सात फेरो को सही अर्थ में निभा पाना कितना मुश्किल हो जाता है? इस धारावाहिक में सात वचन सात फेरो के महत्व को दर्शाया गया है। साथ ही साथ ही यह दिखाया गया है कि वर्तमान समय में युवा वर्ग किस प्रकार से विचलित हो रहा है और कम समय में अधिक फायदे के कारण किस प्रकार से मुश्किलों में फंस जाते है। इसमें विधुर विवाह को प्राथमिकता दी गयी है। वहीं दूसरी ओर महिलाओं के चरित्र को विभिन्न तरीकों से दिखाया गया है। एक सकारात्मक सोच वाली महिला जो अपनी ननद का पालन पोषण करती है और बहुत ही सरल स्वभाव की होने के कारण अपनी घर गृहस्थी को सूझ-बूझ सहेजती है और हर पल अपने पति का मुश्किलों में साथ देती है। दूसरी ओर महिलाओं का नकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत लालची, ईष्यालु और घर गृहस्थी उजाड़ने वाली महिलाओं को दिखाया गया है। जिससे यह अंदाजा लग रहा है कि दूरदर्शन देखने वाली महिला दर्शकों पर सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक है कि नहीं।

काँच के रिश्ते एक पारिवारिक-सामाजिक धारावाहिक के निर्देशक अर्शद खान, निर्माता तरूण बर्मन और ललित अरोड़ा हैं। मुख्य कलाकार-राजीव वर्मा, रूपा वेतिया, सुरिंदर पाल, अनंत जोग, सुहाना, नीरज भारद्वाज, अर्जुन (फिरोज खान), राज गोपाल, दिग्विजय रोहित, और श्रावनी गोस्वामी आदि हैं। इस धारावाहिक कथावस्तु एक डेली न्यूज़ पेपर के रिटायर्ड संपादक के जीवन पर आधारित है जिसमें जीवन में ठहराव, निराशा बेटे-बहुओं की बेरूखी और सम्पत्ति का बटवारा आदि समस्यों के इर्द-गिर्द इस धारावाहिक की कहानी है। इस धारावाहिक में रिश्तों की बुनियाद कितनी मजबूत है यह सवाल दर्शकों के सामने है। ऐ दिल-ए-नादान नामक धारावाहिक के निर्माता जॉय मुकर्जी और निर्देशक सुजॉय मुकर्जी है। मुख्य कलाकार-अविनाश, सुजॉय मुकर्जी,

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

सुधा चन्द्रन, तेज सप्रु और वर्षा उसगांवकर हैं। इस धारावाहिक में महिलाओं का नकारात्मक पक्ष अधिक दिखाया गया है और दिल और दिमाग पर काबू न रखने वाली महिलाओं की तस्वीर दिखाया गया है। पुलिस अधिकारी के रूप, वकील के रूप में महिला पात्रों को दिखाया गया है। इस धारावाहिक में विषम परिथितियों में महिलाओं के धैर्य, साहस और संवेदनाओं को दिखाया गया है। अगर महिलाएँ इस धारावाहिक को सकारात्मक सोच के साथ देखती है तो शायद वे पुरुषों के जालों से बच सकती है। विभिन्न रहस्यों के बावजूद इस धारावाहिक की कहानी का अन्त इस नतीजे पर पहुंचता है कि इसमें घृणा, प्यार और रोमांच सम्मिलित है।

धीरू भाई गोहिल कृत और राजेश सक्षम द्वारा लिखित धारावाहिक मैं बनूंगी मिस इंडिया का निर्देशन साबिर मुस्तफा ने किया है। इस धारावाहिक के निर्माता रूपेष गोहिल, संगीत-ललित सेन और छायांकन-नरेन्द्र मोहन हैं। मुख्य कलाकार-विनोद कांबली, शिल्पा शिंदे, पाखी हेगड़े, राहुल नंदा, फरीदा, पृथ्वी जुत्सी, राज हुसैन, अनवर फतेहान, सोनल भट्ट, सचिन सालवी, श्रीचंद माखिजा, कावेरी घोश, दिनेश ओझा, सुजय मुखर्जी और प्रीती भाटिया हैं। यह धारावाहिक पारिवारिक साजिशों, पति-पत्नी का आपसी विश्वास, बहु-विवाह, विश्वासघात, द्वेशभावना और जमीन जायदाद विवाद जैसी पारिवारिक और सामाजिक बुराईयों पर आधारित है। महिलाओं में परस्पर स्पर्धा, सौन्दर्य प्रतियोगिता, नारीवादी भावना और महिला शक्ति आदि इस धारावाहिक की पटकथा का आधारबिन्दु हैं। इस धाारवहिक में कार्पोरेट जगत की चकाचौंध रोशनी में महिलाओं को संवेहनहीन और मानवीय रिश्तों की धुधलाहट देखने को मिलती है।

रघकुल रीत सदा चली आई एक पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता, निर्देशक और लेखक सिद्धार्थ नागर है तथा इसके संवाद अचला नागर ने लिखे हैं। राजेश खन्ना, मोना अम्बेगांवकर, जया भट्टाचार्य, राजू खेर, अमिता नागिया और मिथिलेश चतुर्वेदी इसके मुख्य कलाकार हैं। राजेश खन्ना पहली बार एक ऐसे धारावाहिक में अभिनय कर रहे हैं जिसे दूरदर्शन पर प्रसारित किया जा रहा है। इस धारावाहिक को कहानी भारतीय समाज के लोगों के व्यक्तिगत संबंधें पर आधारित है। इसमे दिखाया गया है कि लोगों के जीवन में संबंध कैसे बनते हैं, बिगड़ते हैं और जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में किस प्रकार बदलते हैं। इस धारावाहिक की कहानी परम्पराओं, वचनों, संस्कृति आर नैतिक मूल्यों पर आधारित है जो रघुकुल के समय से चली आ रही है।[11] इस धारावाहिक में विवाह पूर्व के रिश्तों को दिखाया गया है और साथ उन संबंधो से उत्पन्न होने वाले खतरों को दिखाया गया है।

कल्पना नामक धारावाहिक के निर्माता एवं निर्देशक परीक्षित साहनी हैं। इसके मुख्य कलाकार-एकता सरैया, ललित परिमु, नेहा बाल्म, रीना वोरा, सुरेश चतवाल, प्रिया आहुजा और अरुण वर्मा हैं। इस धारावाहिक की कहानी एक असाधारण प्रतिभाशाली महिला कल्पना के इर्द-गिर्द घूमती है जिसे अपने सपनों को साकार करने के लिए विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कल्पना कोयल जैसे सुर में गाती है। परन्तु उसका भाग्य प्रत्येक मोड़ पर उसकी प्रतिभा के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। उसे विवश होकर अपने माता-पिता और छोटी बहन के पालन-पोषण के लिए एक पांच सितारा होटल में रिसेप्सनिस्ट की नाकरी करनी पड़ती है। चूंकि वह बहुत ही सुन्दर है इसलिए ग्राहकों का उसकी ओर बहुत अधिक आकर्षण रहता है, जो अक्सर कामुक प्रकृति का होता है। परन्तु जीवन में उसका अनुराग केवल संगीत के प्रति है। कल्पना प्रत्येक विषम परिस्थिति में संघर्ष करती है। उसका बुरा चाहने वाले दुश्मन उसे बरबाद करने की पूरी कोशिश करते हैं। वे उसके मार्ग में पग-पग पर बाधाएं उत्पन्न करते हैं। उसका पहला ही संगीत-समारोह इतना अधिक सफल रहता है कि सारे शहर में उसकी धूम मच जाती है। उसके नाम की घर-घर में चर्चा होने लगती है। उसका पिता, उसका पति, उसके पुराने मित्र पुनः उसकी जिन्दगी में लौट आते हैं। सफलता में सब साथ होते हैं परन्तु असफलता में कोई साथ नहीं होता।[12]

'करम धरम' अपना-अपना एक पारिवारिक धारावाहिक के निर्माता श्री ज्योति नारायण है। निर्देशक राजेश एस0 शाह और सिनेमेटोग्राफर गणश बी0 सालुंके हैं। मुख्य कलाकार-अवतार गिल, ज्योति मक्कर, राजू खेर, अभय भार्गव, दिनेश कौशिक, हल्का अश्लिशा, इमरान खान, नन्दीश सन्धु, शैली खत्री, और नेहा बाम आदि हैं। 'भाग्य' जैसे संवेदनशील शब्द के इर्द-गिर्द इस धारावाहिक की कहानी घूमती रहती है। भाग्य शब्द

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

दर्शकों को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है। अधिकांश लोगों की मान्यता है कि कर्म करने पर ही भाग्य साथ देता है। लेकिन एक अन्य मान्यता के अनुरूप कहा जा सकता है कि भाग्य तब तक साथ देता है जब तक आप अपने धर्म के प्रति निष्ठावान है। कर्म को धर्म के अनुसार किया जाये तो भाग्य स्वत: ही अपना हो जाता है। धन और ताकत के बल पर कोई इंसान परिस्थितियों को बदल सकता है लेकिन भाग्य को नहीं।

**हास्य कथाओं पर आधारित कार्यक्रम**

मनोरंजन इंसान की जरूरत है जिनकी पूर्ति दूरदर्शन के दर्शक इन कार्यक्रमों के माध्यम से करते है। इन कार्यक्रमों की पटकथा में गम्भीरता नहीं है। मसालेदार प्रस्तुति इनकी पहचान है और इन कार्यक्रमों का प्रमुख कार्य दर्शकों का हंसने के लिये मजबूर करना। इस प्रकार के कार्यक्रम दर्शकों द्वारा सर्वाधिक पसन्द किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों में पति-पत्नी की हल्को-फुल्की नोंक-झोंक, सास-बहू की तकरार, आपसी हास्य-व्यंग्य आदि के साथ ही साथ सूचनात्मक एवं मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं।

दूरदर्शन पर प्रसारित महिला संबंधी मनोरंजक कार्यक्रमों में से 'बजेगा बैण्डबाजा', 'कभी सास कभी बहू', 'हरी मिर्ची लाल मिर्ची', 'चिट्ठी' 'चित्रहार', 'रंगोली', 'कला और कलाकार', 'नॉनसेन्स' 'प्राइवेट लि0', 'क्रेजी किया रे', 'व्हील स्मार्ट श्रीमती', 'म्यूजिक, मस्ती और धूम', 'ये तो होना ही था', आंशिक बीबी का', 'भारत की शान' (सिंगिंग स्टार), 'बाइस्कोप फिल्मोत्सव', 'फेयर एण्ड लवली'-'छू लो आसमान', 'सोनी महिवाल', 'फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी', 'क्लोजप अतांक्षरी', 'तू तोता मैं मैना', 'हाथ से हाथ मिला' एवं 'खेलो और जीतो' आदि कार्यक्रम मनोरंजन के माध्यम हैं।

संवाद बैनर की प्रस्तुति 'हरी मिर्ची लाल मिर्ची' एक हास्य धारावाहिक के लेखक-अशोक पटोले, निमाता-राकेश चौधरी और निर्देशक-राजेश गुप्ता है। मुख्य कलाकार-तुषार दलवी, शालिनी कपूर, नीरू बाजवा, अनीता कंवल, आशीश राय और माधवी चोपड़ा आदि है। इस धारावाहिक में एक साथ दो-दो पत्नियों को रखने वाले पुरुषों की स्थिति को दिखाया गया है। दो-दो पत्नियों वाले पुरुषों का दाम्पात्य जीवन रोहन (तुषार दलवी) की तरह ही डगमगा सकता है। रोहन को न तो घर में सुख है और न ही दफ्तर में शान्ति। मन में हमेशा भय के अंदेशों भरे उतार-चढ़ाव रहते हैं। इस धारावाहिक में समाज में बहुपत्नी विवाह जैसी सामाजिक समस्या को हास्य-व्यंग्य रूप में दिखाया गया है।

'सोनी-महिवाल' हास्य धारावाहिक का लेखन राजेश पुरी और छांयाकन-नवनीत ब्यौहार ने किया है। इसका निर्माण-जरीन मेहता, देवेन खोटे और रोनाल्ड डिमेलो, ने किया है। संकलन-मो0 नजीर, पार्श्व गायक-प्रिया भट्टाचार्या, राजीव मित्र और संगीत-आनन्द सोनार का है। इसके मुख्य कलाकार-अनिल मग्गल, सुलक्षणा, वरूण बडोला, श्वेता क्वात्रा राजेश पुरी, चंदन आनंद, रिची शर्मा, समीर और बैशाली आदि मुख्य कलाकार हैं। सोनी और महिवाल दोनों पति-पत्नी है। इस धारावाहिक पति-पत्नी के बीच आपसी नोंक-झोंक के साथ प्रेम की झलक दिखती है। दोनों इस नोंक-झोंक से निपटारा पाने हेतु तरह-तरह के फण्डों का प्रयोग करते है जैसे कभी-कभी वास्तु शास्त्र का सहारा लेते है तो कभी पड़ोसियों से सीख। लेकिन फिर भी उनकी आपसी नोंक-झोंक बरकरार रहती है। कभी-कभी स्वाभिमान दिखाई देता है तो कभी आपसी प्रेम। इस धारावाहिक से दर्शकों को मनोरंजन के साथ-साथ सीख भी मिलती है क्योंकि इसकी कथावस्तु में किसी न किसी रूप में सकारात्मक सोच भी दिखायी जाती है। 'आशिक बीबी' हास्य धारावाहिक की निर्मात्री-प्रेरणा वधावन, निर्देशक-सुशील प्रसाद और सह निर्देशक-अमिताभ सिंह है। इसका संगीत महेश नाईक का है। इसके मुख्य कलाकार राजीव वर्मा, उपासना सिंह, रिधीमा तिवारी, राहन जयवंत, प्रवीण यादव, नीलू कोइली, अमिता नांगिया, निलीमा परंडेकर, उत्तम झा, कृष्णा सोनी, किशन मेहता, कुरूष देबू, जय नीरज, तरन जीत कौर और रिया वालिया हैं।

'कभी सास कभी बहू' हास्य धारावाहिक के निर्देशक-राजेश गुप्ता और लेखक-अशोक पटोले हैं। मुख्य कलाकार-अभिजीत लाहिड़ी, शमा देशपाण्डे, इकबाल, सुष्मिता मुखर्जी, सोनिका हांडा हैं। स्वतंत्र रहने वाली वही बहू हेमा अपनी नई बहू काजल के लिए कठोर सास बन जाती है और अपनी सास सुजाता के लिए मनोरंजन का साधन बन जाती हैं। उसे सुजाता और काजल को एकजुट होने से रोकने के लिए तथा साथ ही साथ अपनी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

सास सुजाता से अपने को स्वतंत्र रखने और अपनी बहू काजल से बिना कोई प्रश्न किए आज्ञा पालन कराने के लिए दुगुने प्रयास करने पड़ते हैं। इस धारावाहिक में परिवार के तीन पुरुष पात्र है, जो अधिकांश अन्य घरों के पुरुषों के समान हैं। पुरुषों की तीन पीढ़ियाँ पूरी तरह परेशान हैं कि घर की महिलाओं के बीच क्या हो रहा है। परन्तु वास्तव में बेचारे जोरू के गुलाम पुरुषों के लिए परिवार में कोई स्थान ही नहीं है। सिटकॉम महिला के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं की झांकी प्रस्तुत करता है।[13]

**साहित्यिक कथाओं पर आधारित कार्यक्रम**

रामायण, महाभारत, भारत एक खोज, राग दरबारी, श्री कान्त, प्रथम प्रतिश्रुति, एक कहानी, कथा सरिता, कथा सागर, खजाना, कश्मकश, तमस, पचपन खम्भे लाल दीवारें आदि। साहित्यिक कथाओं पर आधारित कार्यक्रम दर्शकों द्वारा बेहद पसन्द किये जाते रहे हैं। साहित्य संस्कृति की धरोहर होता है। साहित्यिक कार्यक्रम व्यक्तित्व को संस्कारिक बनाते हं और शिष्टाचार, शिक्षापरक एवं आदर्श गुणों से ओतप्रोत होते हैं।

'बिखरी आस निखरी प्रीत' धारावाहिक, श्रीमती शांति कुमारी बाजपेयी के उपन्यास 'व्यवधान' पर आधारित हैं। इसके निर्माता-टी0 बाजपेयी और कनिका बाजपेयी है। इसका निर्देशन-लेख टंडन और संगीत-खैयाम का है। मुख्य कलाकार कनिका बाजपेयी, दिव्या द्विवेदी, नायनिका, पीयूष सहदेव, अविनाश तिवारी, पूनम भारती, अजीता कुलकर्णी, भरत कपूर, पृथ्वी जुत्षी, अरूण बाली, मसूद अख्तर, राजश्री सीम और नेहा सरफरे हैं। यह धारावाहिक सहयोग और सद्भावना पर आधारित ह इसमें त्याग, तपस्या, सेवा भाव, धैर्य और बलिदान पर आधारित है। इसमें चतुर्भुजी प्रेम संबंधों पर आधारित सीरियल है। इस धारावाहिक में विलक्षण भावुकता और संवेदनशीलता को दखाया गया है जो अब तक किसी और टीवी धारावाहिक में नहीं दिखाया गया है।[14]

**संदेश संबंधी कार्यकम**

सूचना समाज और व्यक्ति प्रथम आवश्यकता है। इस सूचना क्रान्ति के युग में यदि दर्शक सूचनाओं से अनभिज्ञ रहें तो दूरदर्शन जैसे राष्ट्रीय चैनल की असमर्थता है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पर आधारित होते हैं, जिनका प्रमुख उद्देश्य दर्शकों में जागरूकता प्रदान करना और देश-विदेश में घट रही घटनाओं से अवगत कराना हैं। महिलाओं का विकास सूचनाओं के बिना संभव नहीं है क्योंकि सूचना विकास की कुंजी है। सूचना का अधिकार, जानने का हक़, सूचनात्मक विज्ञापन, आंखों देखी, समाचार, जनवाणी, चर्चा में आदि कार्यक्रमों के माध्यम से दूरदर्शन महिलाओं को सषक्त एवं समक्ष बनाने में सहायक हैं।

'एक बूंद जिन्दगी के लिये' जहाँ राष्ट्र के भविष्य को विकलांगता से बचाने पर केन्द्रित है वही स्कूल चलो अभियान देश को शिक्षा की रोशनी से प्रकाशवान बनाने का प्रयास है। जन सूचना अधिकार 'गरीबी की लाठी' को तवज्ज़ो देकर दूरदर्शन अपने विज्ञापन संबंधी कार्यकमों को भी समाजोपयोगी बना रखा है। नरेगा के जरिए लोगों खासतौर पर महिलाओं को अपने ही गांव में रोजगार प्राप्त करने की सूचना प्रेषित कर जागरूकता मिसाल कायम कर रहा है। जनसंख्या नियंत्रण एवं स्वास्थ्य संबंधी तमाम विज्ञापन समाज को विकास हेतु नव दृष्टि दे रहे है। कैडबरी चॉकलेट का विज्ञापन लें, तो इसे चॉकलेट बेचने के लिए नितान्त पारिवारिक व निजी किस्म के रिश्तों की ऊष्मा को टटोलना पड़ता है। सबसे ज्यादा पसन्द किये जाने वाले विज्ञापनों में से एक सीरियल के विज्ञापन को देखें, तो यहां भी परिवार नजर आता है, सेक्स नहीं।'[15] दूरदर्शन पर कार्यक्रम जैसे-विज्ञापन, समाचार एवं सूचनाओं के अन्तर्गत-जनसंख्या नियंत्रण संबंधी, पल्स पोलियो, शिशु एवं मातृत्व सुरक्षा, घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य एवं शिक्षा आदि संबंधी प्रसारित किये जाते हैं।

**सर्वहितार्थ संबंधी कार्यक्रम**

दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों ने तीव्रता से विकासोन्मुख समाज की आंकाक्षाओं, अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप अपने कार्यक्रमों को प्रारूपित करने का विनम्र प्रयास किया है। ध्येय यही रहा है कि बालकों, युवाओं, स्त्रियों, श्रमिकों, कृषकों अर्थात् समाज के प्रत्येक वर्ग को लखनऊ दूरदर्शन की प्रसारण सेवा का लाभ प्राप्त हो सके। महिलाओं पर कार्यकम 'महिलाओं के लिये' तथा 'घर-संसार' जैसे कार्यक्रम दूरदर्शन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

प्रस्तुत कर रहा है। समाज में स्त्री वर्ग को ध्यान में रखकर इन कार्यक्रमों की अन्तर्वस्तु का संयोजन किया जाता है।[16]

दूरदर्शन पर कार्यक्रम जैसे-चर्चा में विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा (परिचर्चा में लिंग असमानता, दहेज, भ्रूणहत्या, रैगिंग आदि), जनवाणी (चर्चा, परिचर्चा, क्विज़ शो, साक्षात्कार आदि), जागो ग्राहक जागो (विभिन्न प्रोडक्ट, ग्राहक और विक्रेता के संबंध में जानकारी आदि), समाचार (विभिन्न देश-विदेश की जानकारी), कल्याणी-1 एवं कल्याणी-2 (विभिन्न बीमारियों के संबंध में जानकारी एवं उपचार आदि), टोटल हेल्थ, सुबह सबेरे एवं योग विज्ञान (विभिन्न बीमारियों के संबंध में जानकारी एवं उपचार, योग शिक्षा, समाचार आदि) प्रसारित किये जाते हैं। आज इस बात से कोई भी दर्शक इन्कार नहीं कर सकता कि जितना सार्थक सहयोग दूरदर्शन ने परिवार नियोजन, जनकल्याण की योजना, टीकाकरण, महिलाओं का स्वास्थ्य एवं अन्य सामाजिक मद्दों को प्रचारित-प्रसारित किया है वह अपने आप में एक अद्वितीय उदाहरण है।[17]

दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों का उद्देश्य सर्वहितार्थ होता है और इन कार्यक्रमों के माध्यम से सभी वर्ग के दर्शक लाभांवित होते हैं। किसानों के लिये कृषि दर्शन, स्वास्थ्य संबंधी-योग विज्ञान, टोटल हेल्थ, सुबह सबेरे, कल्याणी, इवनिंग लाइव शो, जागो ग्राहक जागो, विज्ञापन और समाचार आदि प्रसारण सर्वहितार्थ होता है।

**ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित कार्यक्रम**

पौराणिक कथाओं पर आधारित रामायण, महाभारत, श्रीकृष्ण, विष्णुपुराण, चन्द्रकांता तथा अकबर द ग्रेट धारावाहिक दर्शकों के मध्य खासे लोकप्रिय रहे। यहां तक कि उल्लेख मिलता है कि रामायण धारावाहिक के प्रसारण के दौरान सड़कें सुनसान हो जाती थी और दर्शक अपने टेलीविजन सेटों की पूजा अर्चना करते थे। इन धारावाहिकों को विज्ञापन भी भरपूर मिलते थे। इन धारावाहिकों के एक घण्टे की प्रसारण अवधि के 20 मिनट तो केवल विज्ञापन पर ही व्यय हो जाते थे।

नाटक की तरह फिल्म एक पूर्ण कला माध्यम है जिसमें परम्परागत कला रूपों के साथ-साथ आधुनिक कलाओं का समावेश भी होता है वह कथा, संवाद, अभिनय, फाटोग्राफी, संगीत आदि कई विधाओं और कलाओं की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति का माध्यम है। इन फिल्मों में 'राजा हरिश्चन्द्र' फिल्म से महिलाओं को विषम परिस्थितियों में धैर्यवान बनने की शिक्षा दी गयी है। फिल्म उमराव जान में रिश्तों की जमीनी हकीकत और अनैतिक व्यापार जैसे मुद्दों को उजागर किया गया और फैजाबाद में जन्मी अमीरन, लखनऊ में बेचे जाने के बाद उमराव जान बन जाती है। लखनऊ की सरजमीं पर पली-बढ़ी उमराव की कहानी से नैतिक शिक्षा मिलती है कि हमें महिलाओ को बाजारू होने के कलंक से बचाना चाहिए। यह सत्य है कि अगर हम महिला को व्यापार का माध्यम न बनाये तो नारी को बाजारू औरत कहने से बचाया जा सकता है। फिल्म 'जख़्म' में नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है।

फिल्म 'कोयला' में बेमेल विवाह और जमींदारी जैसी कुप्रथाओं को दिखाया गया है। फिल्म 'डोर' में विधवाओं की दयनीय स्थिति बखूबी दिखायी गयी है। फिल्म 'बाबुल' में विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया गया है विधवाओं की सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में भागेदारी की मानसिक स्थिति को दर्शाया गया है। फिल्म 'पेज-3' की कहानी माधवी शर्मा के ईर्द-गिर्द घूमती रहती है और साथ ही साथ पत्रकारिता जैसे चुनौती पूर्ण कार्य की हकीकत से रू-ब-रू कराया गया है रिपोर्टर और सम्पादक की मजबूरियों को दिखाया गया है। उच्च स्तरीय परिवार का सच्चा आईना इस फिल्म के माध्यम से आम दर्शकों को दिखाया गया है।

**विकास संबंधी कार्यक्रम**

विकास उन्नति प्रथम सीढ़ी है। विकास किसी भी समाज की मूलभूत आवश्यकता है चाहे विकास पुरुष का हो या महिला को स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। मानव का सर्वांगीण विकास, सूचनाओं के अभाव में असंभव है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में विकासपरक कार्यक्रम समाचार, रियलिटी शो, व्हील स्मार्ट श्रीमती, चर्चा में, भारत की शान, छू लो आसमान, क्रेजी किया रे और विज्ञापन आदि कार्यक्रमों के माध्यम से तमाम महिलाओं का किसी न किसी रूप में विकास निश्चित तौर पर हुआ है। किसी भी राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र की महिलाओं के विकास पर निर्भर करता है। अगर दूरदर्शन पर प्रसारित

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

कार्यक्रमों में महिला संबंधी कार्यक्रमों को शामिल किया जाना उतना ही आवश्यक है जितना किसी समाज के लिये महिलाओं की आवश्यकता है। संचार का प्रयोग एक तरफ किसानों में नई-नई तकनीकों और प्राकृतिक सम्पदाओं के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए किया जा सकता है तो दूसरी ओर संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग गरीबी का उन्मूलन और परिवार कल्याण को बढ़ावा देना और लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की दिशा में किया जा सकता है।'[18]

दूरदर्शन पर प्रसारित विकासपरक कार्यक्रमों में महिला संबंधी विकासपरक कार्यक्रमों को वरीयता दी जा रही है। महिलाओं पर कार्यकम 'महिलाओं के लिये' तथा 'घर-संसार' जैसे कार्यक्रम दूरदर्शन प्रस्तुत कर रहा है। समाज में स्त्री वर्ग को ध्यान में रखकर इन कार्यक्रमों की अन्तर्वस्तु का संयोजन किया जाता है।[19]

**प्रेरणादायक कार्यक्रम**

'Example is better than Percept' उक्ति को महिलाओं पर आधारित कुछ खास कार्यक्रम, पूरे समाज के प्रेरणा दायी साबित हो रहे और लोगों को कर्म प्रधान सोच रहने के लिये प्रेरित कर रहे है। सकारात्मक सोच ही सफलता की पहली सीढ़ी भी है। एस0आई0डी0 फर्ज़ (S..I.D. FAARZ) नामक धारावाहिक के निर्माता डा0 मृणालिनी दलाल एवं निर्देशक राजेश गुप्ता है। राजेश वर्मा, मिलिन्द गुनाली, शर्मिली राज और प्रिटा जैन आदि मुख्य कलाकार हैं। 'फर्ज़' उन साहसी एवं खतरों के खिलाड़ियों की जिन्दगी पर आधारित है जिनको अपराध के खिलाफ़ लड़ने हेतु अपनी जिन्दगी से अनेक समझौते करते रहते है। 'कल तो है' अपना नामक धारावाहिक के निर्माता सुनील राणे एवं निर्देशक नितिन तालपाड़े है। खुशबू, करिश्मा मोदी, वर्षा रानी बिसाया, कपिल, शुभम् कपूर, और नेहा बाम आदि मुख्य कलाकार हैं। 'कल तो है अपना' नामक धारावाहिक उन तीन लड़कियों की कहानी पर आधारित है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चमकना चाहती है जो भारत के गांव की है। उनमें से एक लड़की आई0पी0एस0 की पढ़ाई पूरी करके पुलिस फोर्स में जिला पुलिस अधिकारी, मुम्बई में कार्यरत है। एक दूसरी लड़की वर्षा राय मुम्बई स्थित उच्च स्तरीय समाचार पत्र में क्राइम ब्रान्च पर पत्रकार के रूप में कार्यरत है और तीसरी लड़की खुशबू मॉडल बनना चाहती है। एअरटेल की प्रस्तुति एअरटेल क्रेजी किया रे नामक कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में नाचे मायूरी फिल्म की अभिनेत्री एवं टीवी कलाकार सुधा चन्द्रन एवं टीवी कलाकार बख्त़यार अली आदि हैं। यह एक नृत्य रियाल्टी शो प्रतियोगिता कार्यक्रम के तहत् विभिन्न स्थानों से आये प्रतिभागियों के प्रतिभाओं का आंकलन करने के निर्णायकों का सहारा लिया जाता है। दर्द-ए-दिल एवं डाइनामिक नामक उपशीर्षकों पर आधारित नृत्य रियल्टी शो प्रतियोगिता कार्यक्रम में शिल्पा एवं विक्रम ने 'जहा मैं जाती हूँ वहीं चले आते हो .....' नामक गीत पर कठपुतली नृत्य किया है। इस एपीसोड में कठपुतली नृत्य के कारण परम्परागत माध्यम को जीवन्त प्रस्तुति ने प्रभावी बना दिया है।

'फेयर एण्ड लवली-छू लो आसमान' नामक विशेष कार्यक्रम प्रतिभा खोज प्रतियोगिता कार्यक्रम पूजा पुरी द्वारा निर्मित एवं निर्देशित है। इस कार्यक्रम में संचालक फारूक शेख और नीना गुप्ता हैं और सूत्रधार श्रुति सेठ है। यह कार्यक्रम युवा महिला दर्शकों के लिये प्रेरणास्रोत है। इसके अन्तर्गत लड़कियों को रोजगार संबंधी शिक्षा एवं व्यक्तित्व निखार में सहायक है। प्रतिभा के अनुरूप युवा लड़कियों को उनके कॅरियर संबंधी लक्ष्य का प्रशिक्षण दिया जाता है और उनको भविष्य में लक्ष्य निर्धारित करने में मददगार साबित है। आइडिया भारत की शान (सिंगिंग स्टार) नामक रियल्टी शो पर आधारित कार्यक्रम गजेन्द्र सिंह द्वारा निर्मित रियल्टी शो है। इसके युवा संचालन आभास व दीपाली हैं। इस शो के माध्यम से कुल मिलाकर 52 कड़ियों में और 26 सप्ताह के अन्तर्गत प्रसारित किया जा रहा है। इसमें निर्णायक के रूप मं 'डिस्को के बादशाह' बप्पी लाहिड़ी और 'मेलोडी क्वीन' कविता कृष्ण मूर्ति हैं। ग्लैमरस भरी दुनिया में जादुई गायन पूर्ण रियाल्टी शो को गजेन्द्र सिंह कहां तक स्थापित कर पाते हैं। यही इस रियल्टी शो के लिये चुनौती है। इस रियाल्टी शो के माध्यम से चमक-धमक और ग्लैमरस पूर्ण परिवेश से अधिक से अधिक युवा प्रभावित होकर इसे अपने जीवन का लक्ष्य गायिकी को कॅरियर के रूप में अपनाये, यही इस सिंगिंग रियल्टी शो का प्रमुख उद्देश्य है।

'एअर होस्टेस' रूपेश गोहिल निर्मित धारावाहिक का निर्देशन सबीर मुस्तफा ने किया है। मुख्य कलाकार-अंजन श्रीवास्तव, मेघना मलिक, रति पांडे, कृष्णा कोहली, विभावरी प्रधान, शालीन भनोत, शैली

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

शुक्ला, अजय कुमार सिन्हा और मेलानी तायस आदि है। मुझे है बनना एअर होस्टेस, मेरी तमन्ना एअर होस्टेस, मेरा है सपना, अपना करना सारा आसमान में एअर होस्टेस बनने वाली महिलाओं के संघर्षों के संबंध में दिखाया गया है। 'एअर होस्टेस' एक सोप ओपेरा विधा पर आधारित है जिसकी पृष्ठभूमि में हवाई कम्पनी है। यह धारावाहिक केबिन कर्मीदल और विमानन उद्योग के पीछे की राजनीति को उजागर करता है। गलती किसकी? नामक महिला जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर किरण बेदी द्वारा लिखित व निर्देशित कार्यक्रम का प्रसारण किया गया है। महिलाओं सम्बन्धी समस्याएं जैसे अनैतिक व्यापार, खरीद फरोख्त, बाल विवाह, दहेज हत्या, कन्या भ्रूण हत्या आदि कुप्रथाओं को इस कार्यक्रम के माध्यम से दिखाया गया जिसका प्रमुख कारण महिलाओं में जागरूकता, अधिकारों की जानकारी, आत्म रक्षा आदि के सम्बंध में सूचना दी जाती थी।

व्हील स्मार्ट श्रीमती नामक कार्यक्रम का निर्देशन दीप चंदा ने किया है। इसके सूत्रधार अन्नू कपूर हैं। इस धारावाहिक के निर्माता रिक्की सक्सेना है। लेखक राकेश छावड़ा है। यह कार्यक्रम चार चरणों में सम्पन्न होता है। मेरी नजर (प्रथम), मेरी खबर (द्वितीय), मेरा हम सफर (तृतीय), मेरी तेजी (चतुर्थ) इन चरणों में दूरदर्शन इस प्रतियोगिता संबंधी कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलाओं में छिपी प्रतिभाओं को मनोरंजक ढंग से दिखाया जाता है और एक विजेता महिला प्रतिभागी को स्मार्ट श्रीमती का ताज उनकी सास और पति द्वारा पहनाया जाता है। दिनांक 23-12-2009 की इस कड़ी में चार स्मार्ट प्रतिभागियों में से कोलकाता की अर्पिता चटर्जी को पति-संदीप चटर्जी, और सासु मां-शांता चौधरी ने व्हील स्मार्ट श्रीमती का ताज पहना गया।

कब क्यों कैसे? नामक धारावाहिक के निर्देशक-अरूण फ्रैंक, निर्माता-संदीप रेड्डी है। इस धारावाहिक की सूत्रधार साक्षी तंवर हैं। इस धारावाहिक में महिलाओं के साथ घर और बाहर दोनों ही परिस्थितियों में होने वाली समस्याओं को उजागर किया गया है। जिसके अन्तर्गत महिलाओं के साथ पुरुष सहकर्मियों का नजरिया, कार्यक्षेत्र सम्बंधी समस्याओं, दहेज प्रथा, बहु पत्नी विवाह, अनैतिक सम्बंध, अमीरी-गरीबी, बदले की भावना, बाल विवाह, अशिक्षा आदि के कारण महिलाओं के साथ होने वाले अन्यायों को उजागर किया जा रहा है।

'कल्पना' एक परिवारिक धारावाहिक के निर्माता एवं निर्देशक-परीक्षित साहनी हैं। इसके मुख्य कलाकार-एकता सरैया, ललित परिमु, नेहा बाल्म, रीना वोरा, सुरेश चतवाल, प्रिया आहुजा और अरूण वर्मा हैं। यह एक असाधारण प्रतिभाशाली महिला कल्पना की कहानी है जिसे अपने सपनों को साकार करने के लिए अत्यधिक कष्टदायक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कल्पना कोयल जैसे सुर में गाती है परन्तु उसका भाग्य प्रत्येक मोड़ पर उसकी प्रतिभा के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। यह धारावाहिक संगीत के क्षेत्र में भविष्य बनाने वाली महिलाओं स्थिति से अवगत कराता है और उनके संघर्षों की कहानी बयां कर रहा है। पनाह धारावाहिक के निर्देशक हिमांशू कंसल और निर्माता एन0 आर0 पचीसिया है। इस धारावाहिक की कथावस्तु कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित है। इस संबंध में शबाना आजमी ने कहा है कि 'कन्या जन्म में स्त्रियों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, बल्कि पुरुषों को इसका जिम्मेदार माना जाना चाहिए।' इस कार्यक्रम में महिलाओं को पुरुषों द्वारा सताए जाने की बात की है और साथ ही साथ उनके माता-पिता एवं समाज के अन्य लोगों द्वारा उन पर तरह-तरह के लांछन लगाने की बात को भी बयां किया गया है।

साहस कार्यक्रम जागरूकता, स्वरोजगार, व्यवसायिकता और स्वलम्बन जैसी विकासपरक विषयों पर आधारित साक्षात्कार, वृत्तचित्र और संबंधित जानकारियाँ दी जाती है। इस कार्यक्रम के तहत उन बिन्दुओं को विशेष रूप से उजागर किया गया है। महिलाओं को उत्साहित करने के लिए विकासपरक कार्यक्रमों के तहत साक्षात्कार, वृत्तचित्र और संबंधित जानकारियां को आधार बनाया है। यह महिलाओं के अधिकारों एवं समस्याओं पर आधारित है। शबाना आजमी जैसी विशेष हस्तियों के साक्षात्कार के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराईयों का अन्त किया जा सकता है। दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित शास्त्रीय संगीत एवं राष्ट्रीय नृत्य पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण प्रत्येक बृहस्पतिवार रात्रि 11.30 बजे प्रसारित किया जाता है। दूरदर्शन राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित शास्त्रीय गीत-संगीत पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विषयवस्तु में कुचीपुड़ी नृत्य, भरत नाट्यम एवं कथक नृत्य आदि पर आधारित होते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

**– डॉ० रश्मि गौतम**
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

शास्त्रीय संगीत संबंधी अन्य कार्यक्रमों की विषयवस्तु के अन्तर्गत कथक, बाजे पायल (रात्रि 9.30-10.00 बजे-रविवार), जलसा, (रात्रि 10.30-11.00 बजे-रविवार), भरत नाट्यम, तबला वादन और गिटार वादन आदि पर आधारित कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है।

कला और कलाकार साक्षात्कार पर आधारित कार्यक्रम श्रीमती गुलाबो बाई का साक्षात्कार अनिल श्रीवास्तव और सहायिका तजीम के द्वारा महिला दर्शकों के लिये प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के तहत महिलाओं के उत्साहवर्धन हेतु विकासपरक कार्यक्रमों के तहत साक्षात्कार, वृत्तचित्र और संबंधित जानकारियां को आधार बनाया है। इस कार्यक्रम के प्रसारण के उपरान्त गीत-संगीत जैसे-नौटंकी, नुकक्ड़ नाटक एवं नाट्य कला आदि के क्षेत्रों में महिलाओं को प्रोत्साहित करना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हैं। इन्होंने लगभग पांच दशकों तक नौटंकी जैसी लोक नाट्य शैली में काम किया है। नुकक्ड़ नाट्य (नौटंकी) शैली के क्षेत्र में यह प्रथम महिला है। गुलाबो बाई को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 'नदी नारे न जाओ श्याम पइयाँ पड़ूँ' एवं 'छल्ला की मुदरिया मोरी नगुनेवा जड़ी' आदि इनके प्रसिद्ध नगमा हैं।

दूरदर्शन जो ऐसे तमाम समाचारों को अपने विषयवस्तु में शामिल करता है समाज के लिये प्रेरणाप्रद होते है। कई कार्यक्रमों में भी आम जन के ऐसे प्रयासों को उजागर किया जाता है जो किसी कारनामे से कम नहीं होते हैं। जैसे-किरण, किरण वेदी का कार्यक्रम गलती किसकी?, उड़ान, शाल्मनी, युग, स्वाति छू लो आसमान, एस0आई0डी0 फर्ज, जो कहूंगा सच कहूंगा कल तो है अपना, पनाह, कल्पना' आदि।

**उपसंहार**

मानव समाज की प्रगतिशीलता ही सामाजिक परिवर्तन की घटक है। दूरदर्शन का विकास, प्रायोगिक सेवा से लेकर डीटीएच तक का सफर सराहनीय रहा है। राष्ट्र के बहुआयामी विकास हेतु दूरदर्शन 'मील का पत्थर' स्थापित कर रहा है। दूरदर्शन समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन सम्यक् ढंग से करने हेतु सदैव तत्पर रहता है। समाज के हित में सार्वभौमिकता को सिद्ध करने वाले विविध कार्यक्रम दूरदर्शन पर प्रसारित किये जाते हैं।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पर आधारित दूरदर्शन आज भी उसी रूप में देखने को मिलता है चाहे भल तकनीकी बदलाव किये गये हो किन्तु राष्ट्र का दर्पण के रूप में आज भी कायम है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसे मूल मंत्र पर आधारित प्रसारण की नीतियां जस की तस ही है। दूरदर्शन की बढ़ती लोकप्रियता से इस बात की पुष्टि हो रही है कि आधुनिक ग्लोबल युग में दर्शकों के लिये सूचना, शिक्षा और मनोरंजन अहम् जरूरत बनता जा रहा है। सामाजिक स्तर के आधार पर दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है, जिसके तहत सम्पूर्ण समाज का परिदृश्य दिखाया जाता है।

क्या ऐसे नारी शक्ति पर आधारित विज्ञापनों, फिल्मों और सीरियलों के कारण महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सकेगा? आखिर कब तक जन्म से पूर्व हत्याएँ होती रहेगी? ऐसे अपराधियों के लिए सजा की उचित व्यवस्था कैसे संभव हो सकती है? दूरदर्शन पर प्रसारित विभिन्न धारावाहिकों और विज्ञापन फिल्मों में कन्या भ्रूण हत्या संबंधो जिन समस्याओं को दिखाया जाता है दर्शकों को उनसे सीख लेकर सचेत हो जाना चाहिए ताकि भविष्य में लिंग असमानता से निजात पाया जा सके। है। नारी को ममता की मूर्ति और दया की देवी माना जाता है फिर भी महिलाओं पर अत्याचार और जुल्म ढाये जाते है। यहां तक कि कन्या जन्म को अभिशाप माना जाता है और उस अजन्मी कन्या की जन्म से पूर्व ही हत्या कर दी जाती है। जरा सोचिए! महिलाओं की घटती संख्या के कारण मंडप सूने ना रह जाये और पांडव प्रथा का सामना करना पड़े। महिला सशक्त हो सकती है, संवेदन हीन नहीं। अन्त में कन्याभ्रूण हत्या पर पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

नारी है आधार सृष्टि की उसको और न सताना,
गर्व करो न पुरुषार्थ पर नही तो पड़ सकता पछताना।[20]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

**दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन**

– डॉ० रश्मि गौतम
प्रवक्ता-पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

**सन्दर्भ ग्रन्थः-**

1. प्रभु झिंगरन, टेलीविजन की दुनिया, लखनऊ, भारत बुक सेन्टर, 1998।
2. डॉ0 कृष्ण कान्त रत्तू, संचार क्रान्ति और बदलता सामाजिक सौन्दर्यबोध, जयपुर
3. एम0एल0 गुप्ता व डी0डी0 शर्मा, इण्टरमीडिएट समाजशास्त्र, आगरा, साहित्य भवन, 1996।
4. इग्नू WRT-01, जनसंचार का सामान्य अध्ययन, खण्ड-4 पृ0सं0-55,56,
5. दिनेशनन्दिनी एवं रश्मि मल्होत्रा, नये आयामों को तलाशती नारी, दिल्ली, नव चेतन प्रकाशन, 2003।
6. डॉ0 चन्द्र प्रकाश मिश्र, मीडिया लेखन : सिद्धान्त और व्यवहार, दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2003।
7. आर0 गौतम, संचार श्री (षोध पत्रिका), महिलाओं के विकास में टेलीविजन की भूमिका, लखनऊ, 2003।
8. कंचन भट्ट, कल्याणी (प्रगति चक), लखनऊ, प्रसार भारती दूरदर्शन केन्द्र, 2003,
9. प्रो0 एस0पी0 दीक्षित एवं पवन अग्रवाल, मीडिया लेखन कला, लखनऊ, न्यू रॉयल बुक कम्पनी, 2003।
10- www.ddindia.gov.in/hindi/homepage/program+ column+3/ family.hmt.
11- www.ddindia.gov.in/Hindi/Homepage/Program+ Column+3/ Soap.hmt.
12- www.ddindia.gov.in/Hindi/Homepage/Program+ Column+2/ Comedy.htm.
13- www.ddindia.gov.in/Hindi/Homepage/Program+ Column+3/ Drama.hmt.
14. डॉ0 कृष्ण कान्त रत्तू, संचार क्राान्ति और बदलता सामाजिक सौन्दर्यबोध, जयपुर,
15. दृष्टि-सृष्टि, लखनऊ, प्रसार भारती दूरदर्शन केन्द्र, मार्च-2002।
16. डॉ0 कृष्ण कान्त रत्तू, संचार क्रान्ति और बदलता सामाजिक सौन्दर्यबोध, जयपुर,
17. डॉ0 कृष्ण कान्त रत्तू, संचार क्रान्ति और बदलता सामाजिक सौन्दर्यबोध, जयपुर,
18. दृष्टि-सृष्टि, लखनऊ, प्रसार भारती दूरदर्शन केन्द्र, मार्च-2002।
19. आर0 गौतम, संचार श्री (शोध पत्रिका), महिलाओं के विकास में टेलीविजन की भूमिका, लखनऊ, 2003।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN